मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 4, अंक 68, सितम्बर(प्रथम), 2019

शव
(A DEAD BODY)
अंतोन चेखव

अनुवादक - कुबेर

अगस्त महीने की सुनसान रात थी। खेतों की ओर से धीरे-धीरे धुँध छाना शुरू हुआ और देखते ही देखते आँखों के सामने की हर चीज परदे से ढँक गई। चाँद की रोशनी ने पल भर में जैसे किसी विशाल सफेद परदे पर शांत और सीमा रहित समुद्र का चित्र बना दिया हो। बेहद ठंडी और नम हवाएँ चलने लगी। सुबह होने में अभी काफी वक्त था। जंगल के किनारे-किनारे गुजरनेवाली सड़क से दो कदमों की दूरी पर एक अंगीठी टिमटिमा रही थी। पास ही मदार के एक छोटे से पेड़ के नीचे सिर से पाँव तक नये सफेद लिनेन कपड़े से ढ़का हुआ एक शव पड़ा हुआ था। शव की छाती के पास लकड़ी का बना हुआ एक धार्मिक प्रतीकचिह्न रखा हुआ था। शव के बाजू में सड़क किनारे दो किसान अनिच्छापूर्वक, मजबूरी में शव की रखवाली करते हुए बैठे थे। उनमें से एक, जो लंबा और हट्टा-कट्टा जवान था, जिसकी बड़ी-बड़ी मूँछें और भौंहे थी, जो भेड़ की खाल से बने फटे हुए जूते पहने हुए था, नम घास पर अपनी दोनों टाँगों को लंबा फैला कर बैठा था और हर संभव वहाँ से खिसकने की कोशिश में लगा हुआ था। वह अपनी लंबी गर्दन को एक ओर झुकाकर, एक टेढ़ी लकड़ी का चम्मच बनाकर, अंगीठी को कुरेंदते हुए नाक की ओर से जोर-जोर से साँसे ले रहा था। दूसरा किसान मरियल, ठिगना और बूढ़ा था, जिसके चेहरे पर चेचक के दाग थे, जिसकी खड़ी-खड़ी मूँछें और बकरे की दाढ़ी के समान छोटी सी दाढ़ी थी, अपने दोनों घुटनों को अपनी बाहों में जकड़कर, बिना हिले-डुले अँगीठी को एकटक देखते हुए बैठा था। उन दोनों के बीच उनके चेहरों पर लाल रोशनी बिखेरती हुई एक छोटी सी अँगीठी टिमटिमाती हुई जल रही थी। चारों ओर भयानक सन्नाटा पसरा हुआ था। केवल चाकू से लकड़ी को खुरचने की और जलती हुई लकड़ियों के चटकने की आवाजें आ रही थी।

''सियोमा! क्या तुम सो नहीं रहे हो ....'' युवा व्यक्ति ने पूछा।

''मैं ... मैं सोया नहीं हूँ.....।'' बकरा दाढ़ीवाले ने चैकते हुए कहा।

''तब ठीक है। यहाँ अकेला बैठना काफी भयानक है, कोई भी डर जायेगा। ... तुम मुझसे कुछ बातें करो सियोमा, कुछ भी।''

''सिमोस्का! तू भी अजीब आदमी है। कोई और होता तो बात करता, हँसता, गाना गाता, कहानी सुनाता, पर तुम, ... तुम्हें तो कुछ भी नहीं आता। तुम तो बाग के बिजूका जैसे हो, अंगीठी की ओर टकटकी लगाये, आँखों को गोल-गोल घुमाते हुए चुपचाप बैठे हो। तुमको तो कुछ भी नहीं आता ..... बातें करते हो तो लगता है कि मारे डर के काँप रहे हो। मैं कह सकता हूँ, यद्यपि तुम पचास साल के हो, पर तुम्हारी बुद्धि छोटे बच्चे से भी गयी-बीती है। तुम एकदम बुद्धू हो, इस बात का तुम्हें दुख नहीं होता?''

''माफ करो मुझे।'' बकरे दाढ़ीवाले ने झल्लाकर कहा।

''और मुझे तुम्हारी मूर्खता देखकर तुम्हारे ऊपर दया आ रही है, तुम ठीक ही कहते हो। तुम्हारा स्वभाव बहुत अच्छा है, तुम बिलकुल सीधे-सादे किसान हो, पर परेशानी की बात यह है कि तुम्हारे दिमाग में केवल भूसा भरा हुआ है। तुम अपने आप में कुछ समझदारी पैदा करो, ईश्वर ने तुम्हारे साथ बड़ा जुल्म किया है, तुम्हें जरा भी समझदारी नहीं दी है। तुम्हें कुछ तो कोशिश करनी चाहिए, सियोमा ..... तुम हर बात को ढंग से सुना करो, ठीक से समझा करो और सोच-समझकर बात किया करो, खूब सोचा करो, खूब सोचा करो। किसी भी शब्द की तुम्हें समझ नहीं है, प्रत्येक शब्द को ढंग से सुना करो, दिमाग लगाकर समझा करो कि उसका क्या मतलब होता है, और कब उसका इस्तेमाल किया जाता है। आया समझ में? खूब मेहनत किया करो। यदि तुम किसी बात का मतलब नहीं समझ सकोगे, तो बुद्धू बनते रहोगे, और मरने के दिन तक तुम्हारी कोई प्रतिष्ठा नहीं बन पायेगी।''

बातचीत चल ही रही थी, तभी जंगल की ओर से किसी के कराहने जैसी आवाज आई। पेड़ों की शाखाओं और पत्तियों से सरसराहट की आवाजें आने लगी, जैसे कि कोई चीज पेड़ों से टूटकर जमीन पर गिरी हो। आवाज एक बार फिर गूँजी। युवक भय से कांपते हुए जिज्ञासा भाव से अपने साथी की ओर देखने लगा।

''कोई उल्लू है, किसी छोटी चिड़िया का शिकार किया होगा।'' सियोमा ने धीरे से कहा।

''क्यों, सियोमा, क्या यह पक्षियों का गरम देशों की ओर पलायन करने का समय है?''

''बिलकुल, वही समय है।''

''यहाँ कितनी ठंडी सुबह होती है। यह परंपरा बहुत पुरानी है। सारस ठंडी प्रजाति के प्राणी होते हैं। यहाँ की ठंड देखो, इतनी ठंड में ये मर जाते हैं। देखो, मैं तो कोई सारस नहीं हूँ फिर भी ठंड में अकड़ा जा रहा हूँ ..... अंगीठी में कुछ और लकड़ी डालो।''

सियोमा अपनी जगह से उठा और झाड़ियों के अँधेरे में गायब हो गया। वह झाड़ियों में जाकर सूखी टहनियाँ तोड़ने लगा। उसका साथी टहनियों के टूटने की आवाजें सुनता हुआ, मारे डर के अपनी आँखें बंद करके बैठा रहा। सियोमा अपनी बाजुओं में भरकर सूखी लकड़ियाँ लेकर आया और अंगीठी में झोंक दिया। अंगीठी जैसे सूखी लकड़ियों की ही भूखी थी, तुरंत टहनियों को चाटने लगी, और भभक उठी। सड़कों पर, शव के सफेद लिलेन कपड़े पर और उन दोनों के चेहरों पर रक्ताभ रोशनी बिखेरने लगी, शव के हाथ-पैर और उसके छाती के पास रखा लकड़ी का धार्मिक प्रतीकचिह्न दिखने लगा। दोनों चैकीदार एकाएक चुप हो गये। डर और घबराहट

के मारे युवक ने अपनी गर्दन जमीन की ओर झुका ली। बकरा दाढ़ीवाला पहले की ही तरह बिना हिले-डुले, अंगीठी की ओर टकटकी लगाये बैठा रहा।

''सच है! जो सियोन से प्रेम नहीं करता, प्रभु के द्वारा उसकी निंदा की जायेगी।'' रात के सन्नाटे में मद्धिम आवाज में उन लोगों को यह अस्वाभाविक गीत सुनाई दिया। फिर धीरे-धीरे पदचाप की आवाज सुनाई दी और किसी आदमी की काली आकृति, जो संतों के समान छोटा सा कैसाक[1] और लंबा-चैड़ा टोप पहना हुआ था, जिसके कंधे पर बटुआ टंगा हुआ था, अंगीठी की रक्ताभ रोशनी में आता हुआ दिखाई दिया।

''हे ईश्वर! हे मदर मेरी! तुम्हारी कृपा से सब अच्छा हुआ।'' उस मानवाकृति ने कर्कश आवाज में कहा - बीच जंगल और घोर अंधेरे में अंगीठी देखकर मेरी आत्मा प्रसन्न हो गई। ..... पहले तो मैंने सोचा कि आप लोग घोड़ा चरानेवाले होगे; फिर सोचा कि ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि घोड़े कहीं दिख नहीं रहे हैं। तब मैंने सोचा कि आप लोग कोई चोर होगे, और यह सोचकर तो डर ही गया था कि कहीं तुम लोग किसी धनी लाजर[2] को लूटने के लिए यहाँ छिपकर बैठे हुए लुटेरे न हो। फिर मैंने सोचा, जिप्सी लोग मूर्ति को प्रसन्न करने के लिए बलि चढ़ा रहे होंगे। और मेरी आत्मा खुशी से उछल पड़ी। फिर मैंने मन ही मन कहा - जाओ, फिओडोसी[3], ईश्वर के सेवक, शहीदों के ताज जीतो और पतंगा बनकर पंख खोलकर प्रकाश में नृत्य करो। अब मैं यहाँ, आप लोगों के सम्मुख खड़ा हूँ। आप लोग न तो कोई चोर हो और न ही कोई डाकू। ईश्वर आप लोगों को शांति दे।''

''नमस्कार।''

''अच्छा, पुरातनपंथी साथियों, यहाँ से मकुहिंस्की ब्रिकाई्स जाने का रास्ता आप लोग जानते हैं क्या?''

''वह तो यहाँ से बेहद नजदीक है। यह सड़क पकड़कर आप सीधे चले जायें। कोई डेढ़ मील चलने के बाद आपको हमारा गाँव, अननोवा मिलेगा। फादर! गाँव पहुँचकर आप दायाँ मुड़ जाइयेगा और नदी के किनारे-किनारे चलिएगा। अनानोव से दो मील चलने के बाद आप मकुहिंस्की ब्रिकाई्स पहुँच जायेंगे।''

''ईश्वर आप लोगों का भला करे। परंतु तुम लोग यहाँ बैठे क्यों हो?''

''हम लोग यहाँ चैकीदारी करते बैठे हैं। उधर देखिए, शव पड़ा हुआ है ....।''

''क्या? क्या पड़ा हुआ है? हे होली मदर।''

तीर्थयात्री ने लिनेन के सफेद कपड़े में शव और लकड़ी के प्रतीकचिह्न को देखा और उसने अपना आपा खो दिया। उसके पैर हिंसक तरीके से उछलने लगे। इस अनपेक्षित दृश्य को देखकर उसके दिमाग ने काम करना बंद कर दिया था। कभी वह पागलों की तरह उपद्रव करने लगता और कभी मुँह फाड़कर और आँखें छटकाकर अपनी जगह में स्थिर खड़ा रहता। तीन मिनट बाद वह एकदम शांत हो गया, जैसे उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा हो और उसने बड़बड़ाना शुरू कर दिया, ''हे ईश्वर! हे होली मदर! मैं तो अपनी राह चला जा रहा था, किसी का कुछ बिगाड़ा नहीं था, फिर अचानक यह दुख क्यों?''

''आप हैं कौन?'' युवक ने पादरी से पूछा।

''न .... नहीं... मैं तो एक मठ से दूसरे मठ की ओर जा रहा था। क्या आप जानते हैं? मिहिरन पोलिकारपिच को, जो ब्रिकार्ड के फोरमैन हैं? हाँ हाँ, मैं उसका भतीजा हूँ ..... आप लोग यहाँ क्या कर रहे हैं, हे ईश्वर! आप लोग यहाँ क्यों बैठे हैं?''
''हम लोग यहाँ निगरानी कर रहे हैं .... हम लोगों को इसी काम के लिए यहाँ नियुक्त किया गया है।''
''हाँ, हाँ .....'', उस व्यक्ति ने अपने हथेलियों को अपनी आँखों पर फेरा और फुसफुसाकर कहा, ''और यह मृतक कहाँ से आया था?''
''यह अनजाना व्यक्ति है।''
''यही जीवन है! पर मैं हूँ न.... अ ..र.. भाइयों! आप लोग अपना काम कीजिए ..... लगता है, मैं बहक गया था। मेरे प्रिय दोस्तों! मैं सबसे ज्यादा मुरदों से डरता हूँ। यह सब दिखावा है, जब यह व्यक्ति जिंदा रहा होगा, भला इससे कौन डरता होगा और जब यह मर चुका है, किसी भ्रष्ट्राचारी के समान इसके सामने हम काँप रहे हैं, जैसे कि किसी जनरल या किसी पादरी के सामने हम काँप जाते हैं ..... यही जीवन है, इसकी हत्या हुई है या और कुछ?''
''ईश्वर जाने, हो सकता है, इसकी हत्या हुई हो, या हो सकता, यह खुद ही मर गया होगा।''
''हाँ ..हाँ .. भाईयों, इस बात को भला कौन जान सकता है? शायद इसकी आत्मा स्वर्ग में खुशी से उछल रही होगी।''
''उसकी आत्मा अभी यहीं है, अपने शरीर के पास,'' युवक ने कहा, ''तीन दिनों तक शरीर छोड़कर यह कहीं नहीं जायेगी।''
''हूँ .. ठीक! अब रात कितनी ठंडी हो गई है! किसी के भी दांत किटकिटाने लगेगी। इसीलिए अब मुझे अपना रास्ता नापना चाहिए।''

''गाँव पहुँचने के बाद ही आप दायाँ मुड़िएगा और नदी के किनारे-किनारे चलिएगा।''
''नदी के किनारे-किनारे ..... पक्का .... तब मैं यहाँ खड़ा क्यों हूँ? चलना ही चाहिए। अच्छा भाइयों! अलविदा।''

कैसाकवाला वह आदमी मुश्किल से पाँच कदम चला होगा और रुक गया, ''कफन-दफन के लिए मैं तो एक कोपेक डालना भी भूल गया था,'' उसने कहा, ''अच्छा, पुरातनपंथी साथियों, क्या यह रकम मैं दे सकता हूँ?''
''इस संबंध में हम लोगों से अधिक जानकारी आपको होनी चाहिए। आप एक मठ से दूसरे मठ घूमते रहते हैं। यदि यह स्वाभाविक मौत मरा होगा तब तो यह उसकी आत्मा की भलाई में जायेगा और कहीं इसने आत्महत्या किया होगा, तब तो यह पाप होगा।''

''बिलकुल ठीक ..... और मुझे लगता है कि सचमुच इसने आत्महत्या किया है, इसलिए अब मैं अपना पैसा रख लेता हूँ। ओ, पाप महापाप। यदि कोई मुझे हजार रूबल भी देता तो मैं यहाँ कभी भी नहीं बैठता ..... अलविदा भाइयों।''

कैसाक ने धीरे-धीरे चलना शुरू किया पर फिर रुक गया, ''मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि मैं क्या करूँ?'' उसने बुदबुदाकर कहा, ''सुबह होते तक यहीं आग तापते बैठा रहूँ ..... तब मुझे डर लगेगा .... और अकेला रास्ता चलने में भी मुझे डर लगेगा। मरनेवाला तो मर गया, पर मेरी मुसीबत कर गया। ..... सच कहूँ तो प्रभु ही मेरी परीक्षा ले रहा है। तीन सौ मील चलकर आ रहा हूँ, कुछ नहीं हुआ, और घर के नजदीक पहुँचने के बाद यह मुसीबत। मैं नहीं जा सकता .....।''

''यह सब भयानक है, यह बात बिलकुल सही है।''

''मैं भेड़ियों से नहीं डरता, अंधेरा और चोर उचक्कों से नहीं डरता, परंतु मुरदों से मुछे डर लगता है। मैं मुरदों से डरता हूँ और यह सब इसी का नतीजा है। मेरे भले, पुरातनपंथी साथियों आप लोगों से निवेदन है, मुझे गाँव पहुँचा दीजिए।''

''हमें कहा गया है कि शव छोड़कर हम कहीं न जायें।''

''किसे पता चलेगा मेरे भाइयों, मेरी आत्मा कहती है, किसी को पता नहीं चलेगा। प्रभु आप लोगों को सौ गुना अधिक इनाम देगा। बुजुर्ग भाई! मेरे साथ चलिए। मैं बिनती करता हूँ। बुजुर्ग भाई! आप चुप क्यों हैं?''

''वह बेहद सीधा-सादा आदमी है,'' युवक ने कहा।

''दोस्त! तब आप मेरे संग चलिए। मैं आपको पाँच कोपेक दूँगा।''

''पाँच कोपेक! मैं चल सकता हूँ,'' युवक ने सिर खुजलाते हुए कहा ''मुझे भी सियोमा को अकेला छोड़कर जाने के लिए मना किया गया है। हमारा सीधा-सादा, सियोमा, यदि यहाँ अकेला रह सके तब मैं आपके साथ चल सकता हूँ। सियोमा! तुम यहाँ अकेला रह लोगे?''

''हाँ, रह लूँगा।'' सिधवे ने अपनी सहमति दे दी।

''ठीक!'' बहुत अच्छा, अब मेरे साथ चलिए।''

युवक उठा और कैसोक के साथ चला गया। मिनट भर बाद धीरे-धीरे उनके पैरों की आहट सुनाई देना बंद हो गया। उनके बीच की बातचीत भी सुनाई देना बंद हो गया। सियोमा ने अपनी आँखें बंद की और चुपचाप बैठ गया। अंगीठी मद्धिम होती गयी और अंधकार के आवरण ने शव को ढंक लिया।

- 0 - 0 - 0 -

संदर्भ:-

1. कैसाक - पादरियों द्वारा पहना जानेवाला एक लंबा और कसा वस्त्र।

2. लाजर - बाइबल में लाजर नाम के दो व्यक्ति वर्णित हैं। पहला लाजर यीशु के द्वारा बताई गई कहानी का विषय है (लूका 16:19-31)। लाजर बहुत अधिक गरीब था, कदाचित् बेघर था, और निश्चित रूप से एक भिखारी था (लूका 16:20)। वह अक्सर एक धनी व्यक्ति

की मेज से गिरने वाली जूठन से अपने पेट को भरने की आशा रखा करता था। दोनों पुरुषों की मृत्यु हुई, और यीशु ने बताया कि कैसे लाजर को 'अब्राहम की गोद,' जो कि विश्राम और शान्ति का स्थान है, ले जाया गया, जबकि धनी व्यक्ति को 'अधोलोक', जो कि सचेत पीड़ा का स्थान है, ले जाया गया था (लूका 16:22-23)।

दूसरा लाजर, जिसे बैतनिय्याह का लाजर भी कहा जाता है, मरियम और मार्था का भाई था। ये तीन भाई-बहन यीशु के मित्र और शिष्य थे, और ये वे लोग थे, जिन्हें यीशु से प्रेम था (यूहन्ना 11:5)। एक बार, बैतनिय्याह से यीशु के लिए एक आवश्यक सन्देश आयारू कि यीशु का मित्र लाजर बीमार हो गया था, और मरियम और मार्था चाहते थे कि यीशु आकर उसे चँगा कर दे, क्योंकि उसकी मृत्यु निकट थी।

जब वे बैतनिय्याह में लाजर के घर पहुँचे, तो उन्होंने मरियम और मार्था को दुःखी पाया। उन्होंने चार दिन पहले ही अपने भाई को गाड़ दिया था। यीशु सहायता करने नहीं आया था। वे भ्रमित और निराश थे, परन्तु यीशु में उनका विश्वास अटल था (यूहन्ना 11:17-36)। जब यीशु ने अप्रत्याशित कार्य को किया तो सब कुछ स्पष्ट हो गया; वह लाजर की कब्र पर गया और उसे मृतकों में से जीवित किया (यूहन्ना 11:43-44)।

स्पष्ट है कि लाजर कोई धनी व्यक्ति नहीं था। कहानी में उसे धनी बताये जाने का संदर्भ स्पष्ट नहीं है।

3. फिओडोसी, 17 वी शताब्दि का एक रूसी संत।

- 0 - 0 - 0 -

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें